राम की शक्ति पूजा : उद्देश्य एवं सन्देश

डॉ. आर.पी. वर्मा,
असि. प्रो. एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय गोसाईखेड़ा,
जनपद–उन्नाव, उ.प्र.

प्रसिद्ध पाश्चात्य विचारक सौंजाइन्स ने जिसे औदात्य नाम से अभिहित किया हैः हिन्दी कवियों के काव्य में उसके यदि कहीं दर्शन होते हैं, तो वह केवल निराला के काव्य में ही हो पाते हैं। निराला की औदात्यपूर्ण सर्जनाओं में 'तुलसीदास' और 'राम की शक्ति–पूजा' का नाम ही प्रमुखता के साथ लिया जा सकता है। औदात्य समन्वित के कारण ही 'राम की शक्ति पूजा' कविवर निराला की कीर्ति और यशः कौमुदी का आधार स्तम्भ तो मानी ही जाती है, छायावादी काव्य चेतना और शिल्प सौन्दर्य की चरम सीमा भी इसी काव्य में देखने को उपलब्ध होती है। इसके प्रमुख कारणों में से एक कारण इसकी सहृदयता एवं सन्देशवत्ता भी है। इसमें कवि ने मात्र राम कथा के एक खण्डभाग का ही उदात्त सन्देश भी संघर्ष रता मानवता के लिए प्रसूत किया है। युग–युगों से विषण्ण एवं शोषित पीड़ित मानवता को समतुल्य शत्ति का संचयन करके अन्याय, अत्याचार एवं उत्पीड़न का डट कर मुकाबिला करने की चिर अमर प्रेरणा दी है। इसी प्रेरणामयी अनुभूति के कारण ही छायावादी पर्यावरण में रची गई यह गाद्यात्मक कृति अमरत्त्व का अलक्षित आवरण आढ़ने में समर्थ हो सकी है।

एक बात विशेष ध्यातव्य है। वह यह कि मानवतावादी और मानवता के लिए सन्देश देने के लिए यह प्रायः आवश्यक हो जाता है कि अपने काव्यों के वर्ण्य विषयों एवं उनके नायकों, विचार सूत्रों आदि को सहज मानवीय धरातल आदि का आरय लेकर तो वैसा करना सहज हो जाता है पर मानवीय धरातल पर प्रतिष्ठित महानात्माओं के सुख दुःखों, हर्ष विषादों और कर्मठताओं से जिस उद्देश्य की पूर्ति हो सकती है, जो सन्देश दिया जा सकता है, वास्तव में वही सहज और मानवीयता के लिए कारगर एवं अधिक उपयोगी भी हो सकता है। कविवर निराला इस तथ्य से भली भांति परिचित थे। इसी कारण उन्होंने अपने कथा नायक राम को सबसे पहले देवत्त्व और पर ब्रह्म परमेश्वर के परा प्राकृतिक, आध्यात्मिक एवं दार्शनिक धरातल से उतार कर उन्हें सहज मानवीय धरातल पर प्रतिष्ठापित किया है। तभी 'राम की शक्ति पूजा' का उद्देश्य सफलीभूत एवं चरित्रार्थ हो सका है। उसका सन्देश सबल एवं प्रखर ढ़ंग से जन चेतना को आप्लावित कर सकने में समर्थ हो सका है।

'राम की शक्ति पूजा' में राम युग चेतना एवं परिस्थितियों के अनुकूल ही उच्च ईश्वरीय धरातल से उत्तर कर सहज मानवीय धरातल पर आकर रावण के साथ युद्ध–रत हैं। मानव के समान ही जय पराजय की भावना से उनका मन भी आक्रान्त होता है। सफलता असफलता का सहज संशय उनकी चेतना को द्वन्दग्रस्त भी बना देता है। वे निराशा से आक्रान्त तो होते ही हैं, युद्ध की प्रक्रिया से थके मान्दे, श्रान्त एवं क्लान्त भी दिखाई देते हैं। कवि के शब्दों में इस श्रान्ति क्लान्ति का एक स्पष्ट चित्र देखिएः

"श्लय धनु गुण है, कटि बन्ध स्रस्त, तुणीर घरण,
दृढ़ जटा मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलट से खुल
फैला पृष्ठ पर बाहों पर वक्ष पर विपुल।"

उनका चेहरा और चेतना दोनों निराशाधन्कार से आवृत्त है। तेजस्विता दूर झलमलाती तारिका बन गई है

"उतराज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशान्धकार
चमकती दूर ताराएं ज्यों ही कहीं पार।"

उस पर सहज मानवीय संशय का भाव राम की समग्र अन्तः–बाल्य चेतनाओं को भी ध्वस्त कर रहा है। उससे राघव राम की भरी स्थिरता गल कर घुली जा रही है।

"स्थिर राघवेन्द्र को हिला रहा फिर फिर संश
रह रह उठता जग जीवन में रावण जय भय।"

निराशा, विषाद, विषण्णता और संशय आदि की स्थितियाँ उत्पन्न करके तो कवि ने राम को सहज मानवीय धरातल पर प्रतिष्ठापित किया ही है, उनके हृदय में कोमल क्रांत प्रणय भावनाएं जगाकर भी यही सब किया है। विषाद के उनके क्षणों में राम के मन में सहसा कुमारिका सीता का जनक वाटिका में प्रथम मिलन का दृश्य उजागर हो उठता है। यह दृश्य अपनी प्रेमिका को प्राप्त करने के लिए आतुर सामान्य व्यक्ति के समान ही राम को भी सीता के उद्धार की अन्तः प्रेरणा प्रदान करता है। उधर राम अपनी अन्तर चेतनाओं में भी निहारते है कि स्वयं महाशक्ति रावण का पक्ष लेकर सीता की प्राप्ति में बाधक बन रही है। उधर स्मरण मूर्ति सीता के नयन राम के लिए नव प्रेरणा के अजस्र स्रोत बन जाता है। राम के हाथ पुनर्वार जनक का धनुष भंग करने के लिए उठ जाते हैं। प्रतीक रूप में कहा जा सकता ह। कि अपनी अदम्य शक्ति की गम्भीरता का परिचय देने के लिए राम के साहस उत्साह पुनः मचल उठते हैं। कवि के शब्दों मेंः–

"हर धनुर्भग को पुनर्वार ज्यों उठा हस्त
फिर विश्व विजय भावना हृदय में आई भर"

विश्व विजय की इसी भावना को जराधीन परतंत्र भारतीयों के मन में उजागर करना ही वास्तव में इस काव्य का मुख्य प्रयोजन एवं उद्देश्य प्रतीत होता है। राम के नयनाश्रुओं के बाद इस प्रकार की चेतनाएं इसी तथ्य को ध्वनित एवं उजागर करती हे। विश्व विजय या शत्रु विजय की इस भावना को अत्यधिक प्रदीप्त करने के लिए कवि ने सहज मनोविज्ञान का सहारा भा लिया है। उसने विभीषण की परिकल्पना एक शरणागत भक्त के रूप में न करके अपने अपमान बदला चुकाने वाले सन्धि में बन्धे राजनीतिक एवं कूटनीतिज्ञ के रूप में करके उससे राम के प्रति जो शब्द कहलवाए हैं, वे भी मार्मिक हैं ही सही, उपरोक्त विजय भावना को ही उद्दीप्त एवं प्रदीप्त करने वाले हैं

'रघुकुल गौरव लघु हुए जा रहे तुम इस क्षण
तुम फेर रहे हो पीठ हो रहा जब जय रण
मितना क्षम हुआ व्यर्थ, आया जब मिलन समय
तुम खींच रहे हो हस्त जानकी से निर्दय।
रावण, रावण, लम्पट, खल, कल्मष, गताचार,
जिसने हित कहते किया मुझे पाद–प्रहार,
बैठा उपवन में दुःख देगा सीता को फिर
कहता रण की जय कथा परिषद दल से घिर,
सुनता बसन्त में उपवन में कल कूजित पिक्,
मैं बना किन्तु लंकापति धिक्, राघव, धिक्, धिक्?'

कवि ने राम के रूप में देशवासियों को स्वतंत्रता संग्राम एवं देश के निर्माण कार्यों से किसी भी रूप में हाथ न खीचने की प्रेरणा दी है। शत्रु हमारी निरहिता का उपहास उड़ाएं, हमें उपेक्षित अपमानित करके भी अपनी विजय के गीत गाएं और हम अवसन्न–मन, विपर्यस्त तन बैठ देखते रहें, यह भला कहां की मानवता है?

'राम की शक्ति पूजा' काव्य की सर्जना जिस काव्य में हुई थी, वह देश की पराधीनता का

काल था। गहन अवसाद और निराशा का युग था। स्वतंत्रता के लिए अनवरत संघर्ष तो चल रहा था, पर उसमें कोई विशेष सफलता मिलती दिखाई नहीं दे रही थी। विदेशियों के दमन चक्र से अनवरत आक्रांत होकर भारत एवं उसके नेता एक प्रकार से किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो रहे थे। ऐसे समय में कवि ने रावण की अशोक वाटिका में बन्दिनी सीता को अन्तर चेतना में पराधीन भारत माता मान कर ही चित्रित किया है। राम को देश की स्वतंत्रता, राष्ट्रीयता के आदर्शों, अन्याय एवं अत्याचार के विरूद्ध संघर्ष रत ही प्रतीकात्मक रूप से चित्रित किया है। उधर रावण अनेक प्रकार की अनीतियों, क्रूरताओं, अत्याचारों से पूर्ण अंग्रेजी शासन का प्रतीक बनकर चित्रित हुआ है। अतः राम रावण का युद्ध वास्तव में स्वतंत्रता की सीता प्राप्ति के लिए देश और विदेश का युद्ध बनकर रूपायित हुआ है। अतः स्वभावतः कवि ने राम की मनः चेतना में जिस विषाद और निराशा का चित्रण किया है, वह वस्तुतः समूचे देश की जन चेतना की निराशा बनकर रह गई है। कवि की भाषा में:

"मित्रवर, विजय होगी न समर,
अन्याय जिधर है, उधर शक्ति,"

उस काल में शक्ति सम्पन्नता वास्तव में अन्याय के पक्ष में ही निवास कर रही थी। अतः कवि का स्पष्टतः मत प्रतीत होता है कि शक्ति का सामना गांधीवादी सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह आदि के साधनों से कर के विजय पाना सम्भव प्रतीत नहीं होता है। लोग देख रहे थे कि गांधीवादी, शस्त्रास्त्र, सत्याग्रह और अहिंसात्मक आन्दोलन राम के बाणों के समान ही अलंकृत कार्य एवं नितान्त विफल प्रमाणित हो रहे हैं। राम का निम्नांकित कथन इसी ओर इंगित करने वाला स्पष्टतः लगता है।

"शत शुद्धि बोध सूक्ष्मातिसूक्ष्म मन का विवेक
जिनमें है क्षात्र धर्म का धूल पूर्ण भिषेक,
जो हुए प्रजापतियों के संयम से रक्षित
वे शर हो गये आज रण में श्रीहत, खण्डित"

जैसा कि ऊपर कह आये हैं, कि इस पथ का आशय गांधीवादी सिद्धान्तों की पराजय का उल्लेख करना ही प्रतीत होता है। अतः उसका प्रतिकार आवश्यक है। कविवर निराला ने अजीवन में कभी पराजय नहीं स्वीकारी थी। प्रत्येक विफलता उन्हें और अधिक उद्दीप्त कर देने वाली ही प्रमाणित हुई। अतः वे नहीं चाहते थे कि उनके कथा नायक राम और एतदर्थ में देश का जन नायक किसी भी प्रकार से पराजय एवं निराशा का भाव अपने मन में आने दे। निराला आवेग एवं पौरूष के कवि थे। अतः राम के पौरूष आवेश का जागरण करने के माध्यम से कवि ने शक्ति संचय करके अपने स्वत्त्वाधिकारों की रक्षा के लिए अंतिम क्षण तक शत्रुओं का सामना करने का क्रांतिकारी, युगानुरूप सन्देश प्रस्तुत काव्य में दिया है। राम के रूप में जीवन की विषम से विषम परिस्थितियों को भी चुनौती देना कवि का उद्देश्य है। शक्ति अर्जित करके उन उपस्थित प्रति चुनौतियों के सामने डट जाना कवि का सन्देश है। सर्प के विष सहित होने पर ही उसका आतंक होता है। बलवान और शक्तिशाली की नम्रता एवं क्षमा का ही मूल्य महत्व हुआ करता है। अतः शक्ति विरहित सत्य, प्रेम, अहिंसा आदि की नीतियों का कोई मूल्य नहीं। ऐसी स्थिति में तो शक्तिशाली और साधन सम्पन्न अन्यायी अधर्मी और विघर्मी अनवरत विजय प्राप्त करता रहेगा। राम का यह आश्चर्य और दैवी विधान के प्रति जिज्ञासा भाव तथ्यात्मक है कि :

"आया न समझ में यह दैवी विधान
रावण अध मरत भी अपना, मैं हुआ अमर,
यह रहा शक्ति का खेल समर शंकर, शंकर।"

जब युद्ध एवं जय पराजय का भाव शक्ति का ही खेल है, तो फिर क्यों न समग्र एवं एकाग्र भाव से

शक्ति का संचय किया जाये? जब सत्य, प्रेम, अहिंसा न्याय आदि के मार्ग विफल हो जाय तो फिर शक्ति संचय एवं उसके उपयोग के बिना अन्य उपाय ही क्या है? शक्ति संचय एवं उपयोग से ही विजय का विधान सम्भव हो सकता है, तभी तो कवि ने जाम्बवान के मुख से कहलवाया है।

"विचलित होने का नहीं देखता मैं कारण,
हे पुरूषसिंह, तुम भी यह शक्ति करो धारण
आराधन का दृढ़ आराधन से दो उत्तर,
तुम बरो विजय संयत प्राणों से प्राणों पर।"

जाम्बवान राम को मौलिक शक्ति की आराधना और संचय की प्रेरणा देता है, क्योंकि अन्याय अतिति के नीतिकार और अपने सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा का अन्य कोई उपाय नहीं है। अतः राम शक्ति की मौलिक साधना में अपनी अन्तिम और समूची विजय के लिए निरत हो जाते हैं। उसके पक्ष में आने वाली बाधाओं में भी अन्त में सफलता पा लेता है। इस प्रकार कविवर निराला ने दिखाया है कि हमारे पास सत्य, न्याय, नैतिकता आदि के कितने भी सम्बल क्यों न हों, आज या किसी भी युग में पुरूषार्थ, शक्ति आदि के अभाव में सफलता एवं विजय तो क्यों अपने अस्तित्व, अपने सामान्य मूल्यों की रक्षा भी सम्भव नहीं। यहां एक बात अवश्य ही विशेष ध्यातव्य है। वह यह कि शक्ति संचय से निराला जी का तात्पर्य मात्र भौतिक शक्ति संचय ही नहीं है, बल्कि आत्मिक एवं अन्य सब प्रकार की शक्तियों का संचय करना भी है। इसके लिए पाशविक शक्तियों से मुक्ति, आचरण व्यवहार की पावनता, निःसंगता आदि भी आवश्यक है। साधक के लिए त्याग बलिदान का मार्ग अपनाने पर ही निराशाओं एवं दैन्य भावों का अन्त सम्भव हो सकता है। चेतन अवचेतन किसी भी स्थिति में भूख नहीं रहनी चाहिए। आज अनेक प्रकार की भूख हमारी रग रग में समाई हुई है, इसी कारण हमारा जीवन दिन प्रतिदिन अनेक प्रकार के अभावों से ग्रस्त होता जा रहा है।

'राम की शक्ति पूजा' से जो संदेश निसृत होता है, वह वास्तव में कवि के अपने अनवरत जीवन संघर्षों से ही उदभूत है। कवि ने जीवन भर निष्काम कर्म का प्रश्न किया, यहां भी निष्काम कर्म करने का सन्देश ही उसने राम के माध्यम से रूपायित किया है। कवि के अपराजय भाव के समान उनका आदर्श राम भी अपराजय ही रहता है। अतः कवि देशवासियों को भी हमेशा अपराजयता के अनवरत भाव से संयत रहने का ही चिर सन्देश देता है। पराजय एवं दैन्य भाव को हमेशा के लिए तिलांजलि दे देने की उत्प्रेरणा में ही कवि का जीवन दर्शन और सन्देश प्राणीभूत हुआ है। कवि अनेक संघर्षों में भी आस्तिक, आस्थावादी और आशा का दामन थामे रहा, अतः उसका संदेश भी इन्हीं तत्त्वों से संबलित है। कवि का दृढ़ विश्वास है कि अडिग शक्ति एवं अदैन्य भाव से संघर्ष करने वाला व्यक्ति अन्त में विजय अवश्य प्राप्त करता है। अपने इसी उद्देश्य संदेश को कवि ने प्रस्तुत काव्य में सर्वतोभावेन अभिव्यंजित किया है।

अन्त में, निष्कर्ष स्वरूप हम डॉ0 नगेन्द्र के इन शब्दों के साथ इस प्रश्न को समाप्त करते हैं कि–निराला अत्यन्त सचेष्ट कलाकार हैं। उनकी कला के पीछे चिन्तन और ललित कला की अपेक्षा प्रतिभा की अन्तः प्रेरणा अधिक निहित है.....निराला जी रंगों की मड़ियों को जड़ कर चित्र तैयार नहीं करते बल्कि प्रेरणा के स्पर्श में ही वे चित्रांकन करते हैं। उन्होंने 'राम की शक्ति पूजा' में भी निश्चय ही एक सबल प्रेरणादायक एवं चिन्तन सन्देश वाहक चित्र प्रस्तुत किया है।

संदर्भ

1. 1.निराला और उनकी राम की शक्ति पूजा – प्रो. देशराज सिंह भाटी, पृ. 21

2. 2. निराला की साहित्य साधना– भाग 1, भाग 2, भाग 3, पृ. 45, 85, 86

3. 3. निराला – राम विलास शर्मा, पृ. 35

4. 4. निराला की कविताएं और काव्य भाषा – रेखा खरे, पृ. 68

5. 5. हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास – लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय, पृ. 76

6. 6. हिंदी साहित्य में प्रतिरोध के स्वर – विवेक निराला, पृ. 52

Copyright © 2016 *Dr R.P Verma*. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.